RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

Where dream Chisels into reality

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • October 2023 • PAGES 4 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

फिल्म यारियां–2 के प्रमोशन के लिए टेक्निया कॉलेज पहुंचे सितारे, छात्रों के साथ लगाए जमकर ठुमके

टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज में बॉलीवुड स्टार्स अभिनेत्री दिव्या खोसला कुमार व अभिनेता पर्ल पुरी और मीजान जाफरी 20 अक्टूबर को रिलीज हुई अपनी फिल्म यारियां 2 के प्रमोशन के लिए पहुंचे।

टेक्निया संस्थान के डीन अकादमिक डॉ एम एन झा, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ गोपाल ठाकुर और डॉ शिवेन्दु कुमार राय ने अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ देकर किया। खचाखच भरे हुए सभागार में छात्रों ने अपने चहेते सितारों का स्वागत भरपूर उत्साह व करतल ध्वनि के साथ किया। यारियां 2 के स्टार्स ने छात्रों को बताया कि यह एक हल्की फुल्की कॉमेडी फिल्म है जो परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर एन्जॉय कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि फिल्म के निर्माण में सभी ने कड़ी मेहनत की है और उन्होंने छात्रों से बड़ी संख्या में अपने दोस्तों और परिवारजनों के साथ जा कर फिल्म देखने का अनुरोध किया।

फिल्म यारियां 2 के स्टार्स ने छात्रों के साथ खूब मस्ती की और अपनी फिल्म के गीतों पर छात्र-छात्राओं के संग जमकर ठुमके भी लगाए। टेक्निया सभागार ने छात्रों अपने चहेते स्टार्स के साथ खूब तस्वीरें खींची। वहीं दिव्या ने अपने को एक्टर के साथ कहा, 'हमारी फिल्म यारियां २ रिलीज हो गई है, प्लीज जाकर देखें।

टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ गोपाल ठाकुर और डॉ शिवेन्दु कुमार राय ने बताया कि इस तरह के फिल्म प्रमोशनल इवेंट से छात्रों को फिल्म और विज्ञापन विषय का एक्सप्रेंसियल लर्निंग होता है तथा साथ में

Volunteers of NSS Unit of Tecnia Institute of Advanced Studies participated in IPU Health Fair

Guru Gobind Singh Indraprastha University (IPU) organized a grand health fair at Talkatora Stadium on the occasion of its silver jubilee year. This fair was held from October 5 to October 10 at Talkatora Stadium, Delhi. In which more than 50 volunteers of NSS student wing of Tecnia Institute of Advanced Studies took active and positive participation.

Tecnia NSS unit volunteers also worked to connect the beneficiaries from almost all the health camps with blood donation. Many volunteer students enthusiastically participated in the CPR and First Aid training sessions at the venue. At the same time, people of various age groups received medical examinations and advice at more than 150 specialized medical demonstration sites organized by reputable and government-recommended medical organizations. Here the Ministry of AYUSH also explained the importance of Yoga.

In this health fair, awareness and discussions were organized on topics related to lifestyle-related disorders and their diagnosis, mental health, elderly care, blood and organ donation, cancer prevention, infectious diseases, dental care, nutrition and health counseling, environmental diseases, and their prevention within the Health Awareness Pavilion.

On this occasion, Dr. Ajay Kumar, the Director of the Institute of Technology, stated that the main objective of the participation of the NSS Unit of the Tecnia Institute in this health fair is to raise awareness and bring improvements in the quality of life for the citizens.

वैश्विक शांति एवं समृद्धि की संवाहक है भारतीय ज्ञान परम्परा : शंकरानंद

भारतीय शिक्षण मण्डल के दिल्ली प्रान्त द्वारा 4 नवम्बर, 2023 को आयोजित 'वर्तमान परिदृश्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता' विषयक कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता बोलते हुए भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय संगठन मंत्री बी. आर. शंकरानंद ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा हमें वर्तमान वैश्विक चुनौतियों से लड़ने की राह दिखाने के साथ ही वैश्विक शांति का मार्ग भी प्रशस्त करती है | भारतीय शास्त्रों में जीवन की सभी चुनौतियों से लड़ने का ज्ञान समाहित है, हमें शास्त्रों में निहित ज्ञान परम्परा को वर्तमान शिक्षण सामग्री का अंग बनाने की आवश्यकता है | वैश्विक पटल पर वर्तमान भारत एक सशक्त एवं समृद्ध राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बना रहा है | दुनिया आज भारतीय वैचारिक शक्ति के महत्त्व को समझ रही है |

हमारे परिवार की परिकल्पना एवं गुरु की अवधारणा आज दुनिया को सहज आकर्षित कर रहे हैं | भारतीय ज्ञान को हमें दैनिक जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता है, इसके बिना सही मायने में देश की प्रगति नहीं हो सकती है | शक्तिशाली भारत 'अयोद्धा' है जो वैश्विक शांति का मार्ग प्रशस्त करने की क्षमता रखता है | दुनिया में भारत अपने शास्त्र के आधार पर विशिष्ट पहचान रखता है न कि शस्त्र के आधार पर दुनिया पर विजय की आकांक्षा रखता है | उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा के केंद्रीय बिन्दू के रूप में उपस्थित एकात्मता, संवेदनशीलता, न्यूनतम आवश्यकता, एवं परिपूर्णता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम एवं शोध का अनिवार्य अंग बनाना होगा जिससे भावी पीढ़ी को सकारात्मक दिशा प्रदान किया जा सके | आज भारतीय समाज में अनेक दूषित कारक मिश्रित हो गये हैं जिनकी शुद्धि भारतीय ज्ञान परम्परा द्वारा की जा सकती है |

समाज में मौजूद विघटनकारी शक्तियों के प्रहार को रोकने में 'एकात्मता' महत्वपूर्ण

है | हमें अपने समाज के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है| अपनी आवश्यकताओं में कटौती करके हम प्राकृतिक संशाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित कर सकते हैं | हमें अपने कार्यों में सदैव उत्कृष्टता का प्रयास करना चाहिए | कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो० नागेश्वर राव ने कहा कि भारतीय शिक्षण मंडल का राष्ट्रीय शिक्षा नीति में महत्वपूर्ण योगदान रहा है | शिक्षा के उत्थान में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, एक आदर्श शैक्षिक वातावरण के निर्माण के साथ ही शिक्षक राष्ट्रनिर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है | हमें अपने प्राचीन ज्ञान एवं साहित्य को नई पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए सम्बंधित विषयों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना होगा |

उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बंधित पाठ्यक्रम को लागू करने की दिशा में किये गये कार्य को एक सकारात्मक कदम बताया, साथ ही इग्नू द्वारा संचालित भारतीय ज्ञान एवं परम्परा केंद्रित पाठ्यक्रम के बारे में बताया, एवं जल्द ही 'गीता' केंद्रित पाठ्यक्रम शुरू करने की बात कही | कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली प्रान्त अध्यक्ष प्रो० अजय सिंह ने किया | अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो० सिंह ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता के लिए अनेकों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति दी | राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ ही वैचारिक स्वतंत्रता भी महत्वपूर्ण है, परन्तु वैचारिक स्वतंत्रता के केंद्र में भारतीयता का भाव अति आवश्यक है |इस अवसर पर अखिल भारतीय प्रकाशन प्रमुख प्रो० रवि प्रकाश टेकचन्दानी द्वारा भारतीय शिक्षण मंडल के सदस्यता अभियान की घोषणा की गयी |

जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के कन्वेंशन सेंटर में शनिवार को आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान एक हजार से अधिक लोगों की उपस्थिति में दिल्ली प्रान्त के जिला कार्यकारिणी का संघोष भी हुआ | अतिथियों का परिचय प्रो० संजय भारद्वाज ने प्रस्तुत किया जबकि डॉ० संजीव ने शालेय प्रकल्प का वृत्त रखा | कार्यक्रम का संचालन प्रान्त प्रचार प्रमुख अंशू जोशी ने किया |

Literary Club Organized Article Writing Competition

Tecnia Institute of Advanced Studies, organized an article writing competition centered around the theme "Digital India - Transforming India." The event was spearheaded by the Literary Club of the Institute, under the guidance of Nodal Officer of the Literary club Mr. Amit Sharma, and supported by student coordinators, Anjali and Pragyansh Tiwari.

The theme "Digital India - Transforming India" was carefully chosen to encourage participants to explore and express their thoughts on the role of technology and digitalization in shaping the future of our country. This theme resonates with India's ongoing journey towards becoming a digital powerhouse.

The article writing competition was open to all students of the Institute. Participants were required to submit original articles that addressed the theme in either hindi or english language, as per their choice.

The competition witnessed enthusiastic participation from students across various departments. The articles showcased a wide range of perspectives, reflecting the depth of thought and creativity among the student community.

It provided a platform for students to express their views on the transformative power of digital technology in India.

It not only fostered creative thinking but also encouraged students to engage with pressing issues in the digital age.

The dedication of the Literary Club, along with the guidance of Mr. Amit Sharma and the active involvement of student coordinators Anjali and Pragyansh Tiwari, played a crucial role in making this event impactful. The event reflected Tecnia Institute's commitment to promoting intellectual growth and stimulating critical discourse.

Vani Batra secured 1st position, Shreya secured 2nd position & Radhika Khanna secured 3rd Position. Vansh Shukla & Ghata Sharma got the consulation prize.

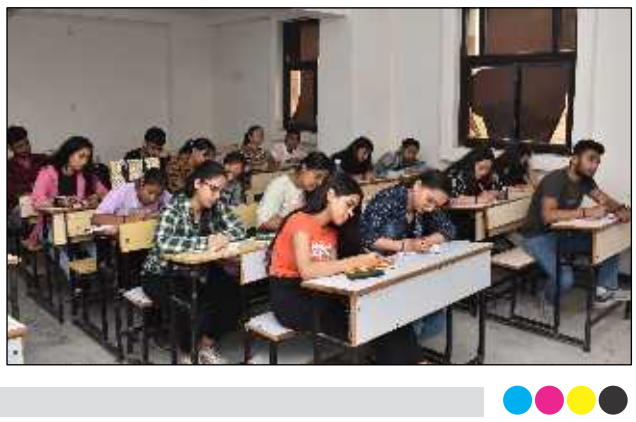

मीडिया में तकनीक की चुनौतियां

अमित शर्मा

मीडिया लगातार बदल रहा है। ग्रीक दार्शनिक हेरेक्लिटस ने कहा था - "परिवर्तन ही स्थायी है।" यह उक्ति मीडिया पर शत प्रतिशत लागू होती है। पारंपरिक जनमाध्यमों से निकल कर मीडिया अपनी नयी राह बना रहा है। बदलती तकनीक मीडिया को नया रुप दे रही है। अभिव्यक्ति के तरीके लगातार बदल रहे हैं। दुनिया सिमट कर छोटी होती जा रही है। मोबाइल फोन ने जिस तरह से दुनिया में अपनी पैठ जमायी है, उससे ये जाहिर है कि भविष्य के मीडिया की कल्पना स्मार्टफोन के बिना करना मुश्किल होगा। आंकड़ों के अनुसार आज दुनिया की करीब 83 प्रतिशत आबादी स्मार्टफोन का इस्मेमाल करती है।

भारत दुनिया के उन पांच सबसे बड़े देशों में शामिल है जहां सबसे ज्यादा स्मार्टफोन इस्तेमाल हो रहे हैं। अभी भारत में करीब 750 मिलियन लोग स्मार्टफोन का इस्तेमाल कर रहे हैं। उम्मीद की जा रही है कि 2026 तक भारत की 1 बिलियन आबादी स्मार्टफोन इस्तेमाल कर रही होगी। ऐसे में यह अंदाज लगाना मुश्लिक नहीं हैं कि न्यू मीडिया, मोबाइल क्रांति के साथ ही सफलता के नये शिखर चढ़ेगा। न्यू मीडिया दरअसल मीडिया के सभी माध्यमों को अपने अंदर समेट लेता है। वो चाहे शब्दों का माध्यम हो, या फिर श्रव्य माध्यम हो, या इससे भी आगे बढ़कर दृश्व-श्रव्य माध्यम हो। आसान शब्दों में कहें तो आपकी किताब आपके स्मार्टफोन के अंदर है। आप रेडियो की तरह इसे सुन सकते हैं और टीवी की तरह देख भी सकते हैं। अब तो बड़े पर्दे से कनेक्ट कर मोबाइल की स्क्रीन भी बड़ी की जा सकती है।

न्यू मीडिया की सबसे बड़ी खूबी ये है कि दर्शक सिर्फ उपभोक्ता नहीं रह गया है। वो उत्पादन भी कर सकता है। अगर किसी के पास खुद को अभिव्यक्त करने की क्षमता है तो न्यू मीडिया उसे कंटेट प्रोड्यूस करने के भी अवसर प्रदान करता है। इसीलिए अभिव्यक्ति के मामले में न्यू मीडिया सभी माध्यमों से अलग है।

लेकिन बदलती तकनीक ने जहां नए अवसर पैदा किए हैं, वहीं नयी चुनौतियां भी प्रस्तुत की है। न्यू मीडिया ने जहां एक और अभिव्यक्ति के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं वहीं दूसरी ओर अनियंत्रित अभिव्यक्ति ने नयी समस्याओं को भी जन्म दिया है। अमर्यादित भाषा एक बड़ी समस्या बन कर उभर रही है। फेक न्यूज की समस्या सबसे ज्यादा सोशल मीडिया पर नजर आती है। पत्रकारिता के पारंपरिक माध्यमों में पूर्ण सत्यापन के बाद ही खबरें दिखायी जाती थी। लेकिन अब गेटकीपिंग जैसी परंपरा न्यू मीडिया से गायब दिखायी देती है। सच से ज्यादा अब झूठ वायरल होता है। मीडिया पर लोगों का भरोसा अब कम हुआ है। खबरों को जांचना और परखना अब पूरी तरह दर्शकों पर ही छोड़ दिया गया है।

इन चुनौतियों के साथ बदलती तकनीक कई ऐसी चुनौतियां भी प्रस्तुत कर रही हैं जो हमारे चेतन स्तर से ज्यादा हमारे अचेतन मस्तिष्क पर प्रभाव डाल रही हैं। ये चुनौतियां बहुत ही गंभीर हैं लेकिन अबतक इन चुनौतियों के प्रति हम लापरवाह ही बने हुए हैं।

इनमें जो सबसे बड़ी चुनौती सामने आ रही है उसे नाम दिया गया है - नोमो फोबिया का। यानि नो मोबाइल फोबिया। ये वो डर है जो मोबाइल न होने की कल्पना मात्र से मन में घर करने लगता है। ये डर अब दबे-छुपे आपके जीवन में भी दस्तक देने लगा है। आप मोबाइल के इतने आदि होने लगे हैं कि मोबाइल पास न होने का डर ही मन में निराशा और बैचेनी भर देता है। क्या आपके साथ भी ऐसा होता है कि आपका फोन अगर आपके पास नहीं हो तो आप के अंदर एक खालीपन भरने लगता है। धीरे - धीरे ये खालीपन, अवसाद और चिड़चिड़ेपन में बदल जाता है।

आपको घबराहट होने लगती है और आप तनाव में घिर जाते हैं। अगर इनमें से कोई भी लक्षण आप के अंदर हैं और वक्त रहते अगर आप सचेत नहीं हुए तो ये जल्द ही फोबिया का रुप ले लेगा। मोबाइल का एडिक्शन सभ्य दुनिया के सबसे खतरनाक एडिक्शन में माना जा रहा है। एक रिसर्च में ये बात साबित हो चुकी है कि मोबाइल इस्तेमाल करने का नशा 21वीं सदी का सबसे बड़ा नॉन ड्रग एडिक्शन है। आपको पता भी नहीं चलता और आप कई मानसिक समस्याओं से घिर जाते हैं। ये आपके दिमाग की तार्किक क्षमता को भी कम करता है। आप एक गुलाम की तरह मोबाइल के इशारे पर चलने लगते हैं। इस बात में भी संदेह नहीं कि मोबाइल फोन हमारे सामाजिक ताने-बाने पर असर डाल रहा है। माना जाता है कि मानव एक सामाजिक प्राणी है। लेकिन इस हकीकत को मोबाइल झुठलाने पर लगा है। ये लोगों में एकाकीपन बढ़ा रहा है। आप को ये समझना जरुरी है कि मोबाइल आपकी मुट्ठी में दुनिया जरुर दे रहा है। लेकिन ये दुनिया वास्तविक नहीं बल्कि आभासी है। बदलते दौर में मोबाइल फोन अपने अंदर पूरी दुनिया समेटे हुए हैं। फिर भी मोबाइल ही आपकी दुनिया नहीं है। आप भले ही अपने स्मार्टफोन के बिना जिन्दगी की कल्पना नहीं कर पाते लेकिन ये समझना जरुरी है कि स्मार्टफोन जिन्दगी नहीं है। तकनीक के खतरों को समझ कर इसका इस्तेमाल किया जाए तब तो तकनीक आपके लिए लाभदायक है। लेकिन इस चुनौती को अगर आप नहीं समझ पाए तो आप एक ऐसे भ्रमजाल में फंसने जा रहे हैं

"Unleashing the Potential: Exploring the Multifaceted Benefits of Artificial Intelligence

Anushka Rawat

Artificial Intelligence (AI) is revolutionizing the way we live and work, permeating nearly every aspect of our daily lives. Far from being a futuristic concept, AI is a tangible and transformative force with a multitude of benefits that extend across various domains. In this article, we'll delve into the vast and multifaceted advantages of AI, highlighting how it's shaping our world for the better.

I. Enhanced Efficiency and Productivity

AI-powered automation is streamlining processes and boosting productivity in numerous industries:

1. Business Operations: AI-driven tools automate routine tasks, enabling businesses to operate more efficiently and allocate human resources to more complex, creative, and strategic endeavors.

2. Manufacturing: AI-driven robots and systems optimize production lines, reducing errors, and enhancing precision and efficiency.

3. Healthcare: AI assists healthcare professionals in diagnosing diseases, managing patient records, and conducting research, leading to improved patient care and operational efficiency.

4. Customer Service : Chatbots and virtual assistants handle routine customer inquiries, freeing up human agents to tackle complex issues, ultimately improving customer satisfaction.

II. Advanced Healthcare and Medical Research

AI is a game-changer in healthcare, offering numerous benefits:

1. Disease Diagnosis: AI-driven algorithms can analyze medical images, such as X-rays and MRIs, to detect diseases like cancer, often with greater accuracy and speed than human doctors.

2. Drug Discovery: AI accelerates drug discovery by analyzing vast datasets to identify potential drug candidates and predict their effectiveness.

3. Personalized Medicine: AI tailors treatment plans to individual patients, taking into account their genetics, medical history, and lifestyle, resulting in more effective and precise treatments.

4. Healthcare Management : AI-driven predictive analytics help hospitals and healthcare providers optimize resource allocation and

predict patient needs, improving overall healthcare quality.

ओटीटी सीरीज का हथकंडा, कहीं हकीकत, कहीं एजेंडा

विनीत उत्पल
भारतीय जनसंचार संस्थान, जम्मू

पुस्तक समीक्षा

लेखक अनंत विजय की पुस्तक 'ओवर द टॉप का मायाजाल' उस सत्यता को परिभाषित करती है, जो ओटीटी के विभिन्न प्लेटफार्म पर वेब सीरीज के किस्सों के जरिये दर्शकों को दिखाया जाता है. देश में इंटरनेट का बढ़ता घनत्व और डाटा सस्ता होने के कारण ओटीटी प्लेटफॉर्म की व्याप्ति बढ़ी है और इन प्लेटफॉर्म पर दिखाए जाने वाले कन्टेंट पर कई तरह के सवाल उठ रहे हैं.... .अनंत विजय ने ओटीटी से जुड़े विभिन्न आयामों की विस्तृत जानकारी इस पुस्तक में दी है.अनंत विजय पुस्तक की भूमिका में कहते हैं कि ओटीटी प्लेटफार्म भारत में मनोरंजन का अपेक्षकृत नया माध्यम है और कोरोना महामारी के दौरान देशव्यापी लॉकडाउन ने इस माध्यम को लोकप्रिय बनाया।

उनका मानना है कि यहाँ दिखाए जाने वाले अधिकतर कंटेंट में एक प्रकार की अराजकता दिखाई पड़ती है. यही कारण है कि विभिन्न ओटीटी प्लेटफार्म पर प्रदर्शित शिकायतों का आंकड़ा 6-7 हजार से अधिक है. वे लिखते हैं कि फरवरी, 2001 में सूचना प्रौद्योगिकी कानून लाया गया और इसके तहत ओटीटी की सामग्री पर नजर रखने का प्रावधान है और इसके लिए त्रिस्तरीय व्यवस्था है, पहला, पब्लिशर के स्तर पर, दूसरा, स्वनियमन और तीसरा, सरकार के स्तर पर. इस पुस्तक में वे नेटफ्लिक्स, प्राइम वीडियो, हॉटस्टार के द्वारा कंटेंट और ग्राहकीय रणनीतियों पर भी व्यापक रूप से प्रकाश डाला है. वे लिखते हैं, 'नेटफ्लिक्स ने दिसंबर 2021 में ग्राहकों को काम मूल्य पर अपनी सेवाएं उपलब्ध करवाना आरम्भ किया। नेटफ्लिक्स ने दो तरह की रणनीति अपनाई थी-एक तो ग्राहकों को जो शुल्क देना पड़ता थी, उसको कम किया और अपने प्लेटफार्म पर भारतीय फिल्मों एवं भारतीय कहानियों पर बनी वेब सीरीजों को प्राथमिकता देना आरम्भ किया... प्राइम वीडियो, हॉटस्टार आदि ने भी भारतीय कहानियों को केंद्र में रखकर कहानियां पेश करनी शुरू कर दी.

पुस्तक के पहले अध्याय 'नग्नता और यौनिकता का बोलबाला' में लेखक ने 'लस्ट स्टोरीज', 'सेक्रेड गेम्स', 'घोउल', 'मिर्जापुर' जैसे वेब सीरीज की स्क्रिप्ट का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि ज्यादातर सीरीज अपराध कथाओं पर आधारित होती हैं, लिहाजा अपराध, सेक्स प्रसंग, गाली-गलौज, जबरदस्त हिंसा आदि दिखाने की छूट निर्देशक ले लेते हैं. ऐसे में वेब सीरीज में परोसी जाने वाले नग्नता और हिंसा को लेकर निर्माताओं को स्वनियमन के बारे में सोचना चाहिए. दूसरे अध्याय 'पाताल लोक में पक्षपात का समुच्चय' में 'पाताल लोक', 'लैला', 'जामताड़ा'. 'रसभरी', 'आर्या', 'पंचायत' जैसे सीरीज के विषयों को लेकर अनंत विजय कहते हैं कि कला की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के नाम पर समाज को बाँटने की छूट ने तो लेनी चाहिए और न ही दी जानी चाहिए. यथार्थ के नाम पर कहानी के लोकेशन और गालीवाली भाषा को पेश करने की जो भेड़चाल वेब सीरीज में दिखाई देती है उस पर भी विचार करना होगा. तीसरे अध्याय 'रंगबाज, महारानी और पूरबिया नाच' में 'रंगबाज', 'महारानी' 'रामयुग' जैसे वेब सीरीज का विश्लेषण किया गया है और बताया गया है कि जी-5 पर प्रदर्शित 'रंगबाज' में उत्तर प्रदेश के खतरनाक अपराधी श्रीप्रकाश शुक्ल के कारनामे को दिखाया गया है जबकि दूसरे सीज न में राजस्थान के गैंगस्टर आनदपाल सिंह के अपराध की कहानी चित्रित की गई थी.

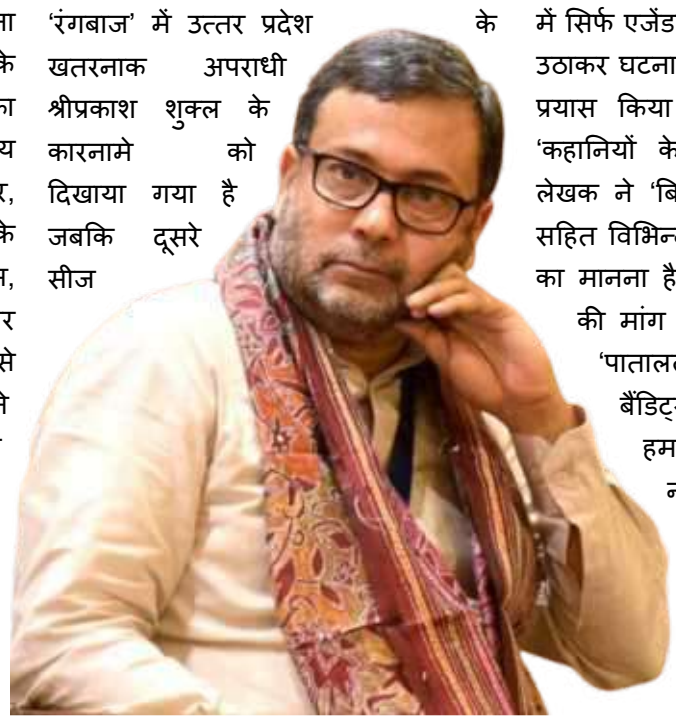

'महारानी' वेब सीरीज बिहार के मुख्यमंत्री रहते हुए लालू प्रसाद यादव जब घोटाले के भंवर में फंसे तो उन्होंने अपनी पत्नी राबड़ी देवी को मुख्यमंत्री बना दिया था. उस घटना पर केंद्रित यह वेब सीरीज थी. वहीं लेखक 'रामयुग' को लेकर कहते हैं कि इस सीरीज में भले ही राम को आधुनिक रूप में दिखने की कोशिश की गई हो, लेकिन उनके मर्यादा पुरुषोत्तम के चरित्र को उसी तरह से पेश किया गया है, जैसा कि वाल्मीकि ने 'रामायण' में या तुलसीदास ने 'श्रीरामचरितमानस' में किया है. अनंत विजय अध्याय चार 'परदे पर काल्पनिक नैरेटिव' में 'लैला', 'द फैमिली मैन', 'तांडव' के विषयों को लेकर कहते हैं कि पाबंदी या बंदिश या पाबंदी के कानून आदि की अनुपस्थिति में स्थितयां अराजक हो जाती हैं. उन दिनों जिस तरह की वेब सीरीज आ रही थी, उनमें कई बार कलात्मक आजादी या रचनात्मक स्वतंत्रता की आड़ में सामाजिक मर्यादा की लक्ष्मण रेखा को मिटाकर नई रेखा खींचने की कोशिश भी दिखाई देती है.

'द फैमिली मैन' में आतंकवाद को जस्टिफाई करने की कोशिश दिखाई देती है. वहीं, 'तांडव' को लेकर वे कहते हैं कि इसकी ऐसी कहानी है, जिसमें न तो निरंतरता है और न ही रोचकता। कहानी के लेखक को भारतीय समझ तक नहीं है. इसकी कहानी में सिर्फ एजेंडा भरा गया था और अख़बारों से उठाकर घटनाओं का भोंडा कोलाज बनाने का प्रयास किया गया था. अध्याय पांच में 'कहानियों के बदलते कलेवर' के जरिये लेखक ने 'बिच्छू का खेल', 'स्कैम 1992' सहित विभिन्न वेब सीरीज के जरिये लेखक का मानना है कि उनमें भारतीय कहानियों की मांग बढ़ी है. वह चाहे 'आर्या हो, 'पाताललोक' हो, 'आश्रम' हो, 'बंदिश बैंडिट्स' हो, 'पंचायत' हो, इन सबमें हमारे आसपास की कहानियां हैं. न सिर्फ कहानियों में, बल्कि इन सीरीज की भाषा और मुहावरों में भी देसी बोली के शब्दों को जगह मिलने लगी है.

वहीं, 'जुबली' नामक वेब सीरीज की कहानी बताती है कि कैसे कम्युनिस्टों ने हिंदी फिल्मों में अपना एजेंडा सेट किया और विचार संग विचारधारा का प्रोपेगंडा कैसे सेट किया। अध्ययन छह 'प्रमाणन के बंधनों से मुक्ति या..' में 'गुंजन सक्सेना: द कारगिल गर्ल' के जरिये हुए विवाद और रक्षा मंत्रालय द्वारा 2023 में जारी निर्देशों की चर्चा की गई है. ..वे लिखते हैं कि निर्देशक शूजित सरकार की फिल्म 'गुलाबो सिताबो' को ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर रिलीज किया गया था, जो भारतीय फिल्मों के प्रदर्शन के इतिहास में एक अहम् मोड़ पर देखा गया. इसके बाद फिल्मों के रिलीज होने का ट्रेंड बदल गया. सलमान खान की फिल्म 'राधे, ओर मोस्ट वांटेड भाई' को जी-5 पर रिलीज किया गया था और रिलीज के साथ इतने दर्शक पहुंचे कि वह प्लेटफार्म थोड़ी देर तक दर्शकों का बोझ ही नहीं उठा सका और हैंग हो गया था. 'वेब सीरीज: मंथन का समय' नामक सातवें अध्याय में ओटीटी को लेकर भारत सहित दूसरे देशों के मौजूदा कानूनों की व्याख्या की गई है.

भारत सरकार ने दिशा-निर्देश में कहा था कि कलात्मक स्वतंत्रता की आड़ में कोई भी ऐसी सामग्री दिखाने की अनुमति नहीं होगी, जो कानून सम्मत नहीं है, लेकिन सरकार ने दिशा-निर्देश जारी करते हुए सेवा प्रदाताओं को इसका तंत्र विकसित करने को

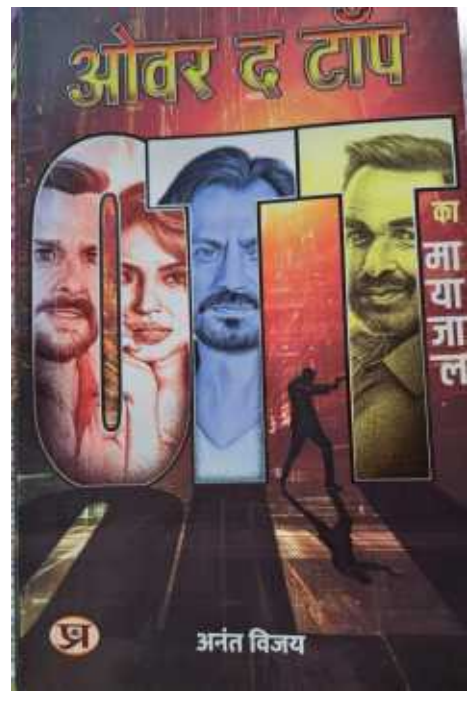

पुस्तक : **ओवर द टॉप का मायाजाल**
लेखक : **अनंत विजय**
मूल्य : **300 रुपये**
प्रकाशक : **प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली**

RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Amit Sharma responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.
Email :
youngster@tecnia.in

UBA Cell organised an Awareness Campaign

The Unnat Bharat Abhiyan Cell of the Tecnia Institute of Advanced Studies organised an awareness campaign on the environment at Bhalswa Dairy in Northwest Delhi. Dr. Rajnesh Kumar Pandey, coordinator of the UBA cell, conducted this activity. Under his guidance, a group of volunteers from the institute participated in the awareness campaign. Volunteers raised slogans related to the environment. They have invited people around and talked to them about the degradation of the environment, to which they all listened carefully. They have also shared their problems and complained about the municipal corporation of that area.

Tecnia shines in 'Anugoonj' Prelims

In the Prelims of IP University's Annual Cultural Festival "Anugoonj" held at Talkatora Stadium, Delhi, students of Tecnia Institute of Advanced Studies qualified for "Anugoonj" by securing first and second positions in several competitions. The prelims of "Anugoonj", a mega cultural event organized annually.

This event is organized every year for the students of the university including its more than 127 afliated colleges to showcase their talent. Anugunj is a famous cultural festival of Guru Gobind Singh Indraprastha University.

Awareness Campaign on Sanitation

In commemoration of the birth anniversary of Mahatma Gandhi, an awareness campaign on sanitation was organised by the Unnat Bharat Abhiyan Cell of the Tecnia Institute of Advanced Studies, afiliated with GGSIPU. The campaign took place under the Unnat Bharat Abhiyan 2.0 initiative by the government of India at Bakhtawar Pur village in New West Delhi. A group of volunteers from the institute visited the village to raise awareness among the villagers about sanitation and maintaining personal hygiene. Volunteers marched on the streets of Bakhtawar Pur with posters, conveyed messages, and raised slogans related to sanitation.